साधकों एवं पाठकों के पत्र हमें निरंतर मिलते ही रहते हैं। प्राय: हर तीसरे पत्र में प्रमुख समस्या यही होती है कि उन्हें अपनी इच्छित साधना में मनोवांछित ढंग से सफलता क्यों नहीं मिल पा रही है? और यह भी सत्य है कि जब साधक को सफलता नहीं मिल पाती है तो उसका मन टूट जाता है। उसके मन में संदेह और तर्क-वितर्क प्रारम्भ हो जाते हैं और एक प्रकार का अविश्वास जन्म लेने लगता है कि क्या यह साधना पद्धति सही है, जबकि यह स्थिति योग्य साधक के साथ नहीं होनी चाहिए। हताशा और निराशा से तो कुछ भी नहीं मिलने वाला और आलोचना करने की अपेक्षा शांत मन से इस पर विचार करना ही अधिक सहायक सिद्ध हो सकता है।

साधकों की समस्याओं, अनुभवों एवं विवरणों के आधार पर हम इस अंक में कुछ सूत्र दे रहे हैं जिनको आधार बनाकर यदि कोई भी साधक, चाहे वह नवागंतुक हो अथवा कुछ समय से साधना में संलग्न, कोई कारण ही नहीं कि वह साधना करे और उसे उसका अनुभव या सफलता न मिले।

यह समस्या का प्रथम और कहा जाए तो एकमात्र सूत्र है—मन में दृढ़ निश्चय व चुनौती का भाव होना कि मैंने अपनी रुचि और क्षमता के अनुकूल यह साधना अपने हाथ में ली है और चाहे जैसी भी परिस्थिति आए, मैं इसे पूर्णता से करूँगा।

साधना शुरू करने से पहले जरूरी बात यह हो जाती है कि आपके पास सही व प्रामाणिक यंत्र तथा अन्य साधना सामग्रियाँ हों, क्योंकि इन्हीं का सहारा लेकर तो अपने इष्ट का दर्शन या सफलता प्राप्त की जा सकती है।

प्रत्येक साधना के पूर्व, चाहे वह किसी भी प्रकार की हो, गुरु यंत्र को स्थापित करके संक्षिप्त गुरु-पूजन करना आवश्यक होता है। संक्षिप्त पूजन का अर्थ होता है कि साधक कुंकुम, अक्षत, पुष्प, दीप तथा धूप से पूजन कर निखिलेश्वरानन्द स्तवन का (अथवा संक्षिप्त क्रम में जो भी स्तुति पाठ उसे याद हो, उसका) पाठ करें और कम से कम एक माला गुरु-मंत्र की अवश्य जप करे।

योग्य साधक, जो साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त करने के इच्छुक हों, उन्हें तो प्रति गुरुवार की प्रात: **तांत्रोक्त गुरु पूजन** पूरे विधि-विधान से नियमपूर्वक सम्पन्न करना चाहिए। यदि वे व्यस्तता के कारण ऐसा कर पाने में असमर्थ हों तो माह में कम से कम एक बार तो अवश्य ही **तांत्रोक्त गुरु पूजन** सम्पन्न करें।

जिस विशेष साधना को करने की इच्छा मन में प्रबल हो पहले उससे सम्बंधित सारी जानकारी और उस विद्या की दीक्षा ले लेना अनिवार्य होता है, जिससे इस पथ पर कदम भटके नहीं और न कदम-कदम पर अटकाव देखने पड़े। प्राय: साधक बिना उचित दीक्षा या ज्ञान के किसी भी साधना को हाथ में ले लेते हैं और जब उन्हें कोई अनुभव नहीं होता तो अविश्वास की दीवार खड़ी कर लेते हैं। **जबकि वे यह नहीं समझते कि भौतिक परीक्षाओं को पास करने हेतु भी तैयारी करनी पड़ती है तो क्या उन्होंने अपने आपको साधना के उस स्तर तक तैयार किया है।**

जिस प्रकार साधना सामग्री का महत्त्व बताने की आवश्यकता नहीं उसी प्रकार साधक यह भी जानता है कि प्रथम बार में सफलता न मिलने पर उसी साधना को दूसरी व

तीसरी बार भी करना चाहिए, किंतु इस बात को वह भूल जाता है कि एक ही सामग्री पर अधिक से अधिक तीन बार ही प्रयोग किया जा सकता है और उसके बाद उसे जल में प्रवाहित कर ही देना चाहिए तथा नयी सामग्री को प्रयोग में लाना चाहिए।

कई बार विभिन्न कारणों से साधना के मध्य बार-बार विघ्न उपस्थित होते रहते हैं और साधक की निद्रा, काम, क्रोध या चित्त की उद्विग्नता अत्यधिक बढ़ जाती है जिसके लिए निवारक प्रयोग के रूप में **भैरव साधना** सम्पन्न कर लेनी चाहिए और अपनी साधना में बांयी ओर तांबे के पात्र में चावलों की ढेरी पर **भैरव गुटिका** रख भैरव की नियमितरूप से **'ॐ भं भैरवाय नमः'** बोलते हुए तेल के दीपक, लोबान या धूप तथा गुड़ के द्वारा पूजा करके ही साधना प्रारम्भ करनी चाहिए। यह एक प्रबल भयनाशक प्रयोग भी है।

साधना के बीच में कई बार ऐसी बाधाएं उपस्थित होने लगती हैं जिनका न तो कोई कारण समझ में आता है और न यह समझ में आता है कि उनसे कैसे निपटें। इसका कारण एकमात्र यही होता है कि व्यक्ति के पूर्व जन्मकृत दोष आड़े आ जाते हैं। ऐसे सभी दोष सरलता से समाप्त नहीं होते। ये दोष केवल साधना में ही नहीं रोजमर्रा की जिन्दगी में भी कड़ुवाहट घोल देते हैं, ऋण का बढ़ते जाना, पत्नी का अस्वस्थ बने रहना, अनायास झगड़े-झंझट में उलझ जाना जैसी स्थितियाँ पूर्व जन्मकृत दोषों के कारण ही उत्पन्न होती रहती हैं और न केवल साधना का मार्ग सुगम बनाने के लिए, अपितु नित्य का जीवन भी सुखद बनाने के लिए साधक को **पूर्व जन्मकृत दोष निवारण सम्बन्धी साधना** सम्पन्न कर ही लेनी चाहिए। सम्भव हो तो इसकी दीक्षा भी प्राप्त की जा सकती है। अक्टूबर 2010 के अंक में इस प्रकार की एक श्रेष्ठ साधना प्रकाशित की जा चुकी है जिसे साधक सम्पन्न कर सकता है।

नित्य रात्रि में सोते समय अपने दिनभर के कार्यों का विश्लेषण स्वयं करने की आदत डाल लेनी चाहिए और जाने-अनजाने जो भी दोष आदि व्याप्त हो गए हों, किसी के प्रति क्रोध या अपशब्द व्यक्त हुआ हो तो उसके प्रति अपने गुरुदेव से क्षमायाचना कर उसे भविष्य में न करने का संकल्प ले लेना चाहिए। जैन धर्म में इसी को **'विपश्यना साधना'** कहा गया है और अनेक प्रमुख जैन संतों ने केवल इसी पद्धति का आश्रय लेकर अपनी साधना में पूर्णता प्राप्त की।

व्यक्ति जहाँ निवास करता है, जिस स्थान पर साधना करता है उसका पूरा-पूरा असर उसकी साधना पर पड़ता ही है। घर में दूषित वातावरण, अतृप्त आत्माओं की उपस्थिति साधक को जहाँ एक ओर साधना में सफलता नहीं प्राप्त करने देती, वहीं साधनाओं के प्रति, गुरु के प्रति मन में विरोधी विचार भी उत्पन्न करती रहती है। गृह-कलह, आय का घटना आदि भी इसी कारण से होता है, जिसके लिए **गृह-दोष बाधा निवारण** प्रयोग सम्पन्न करना प्रत्येक दृष्टि से अनुकूल रहता है।

प्रायः व्यक्ति के जन्म से निर्धारित ग्रह भी उसकी साधना में सफलता अथवा असफलता का कारण बनते हैं और बहुत अधिक प्रयास करने के बाद भी अनुकूल परिणाम नहीं मिल पाते। साधक को इस बात का ज्ञान नहीं होता और वह खिन्न बना रहता है। ऐसे में यदि वह **तांत्रोक्त नवग्रह पूजन** सम्पन्न करे तब भी अनुकूलता मिलनी प्रारम्भ हो जाती है।

साधना में जहाँ सम्बन्धित यंत्र-माला की आवश्यकता पड़ती है, वहीं **'साधना सिद्धि यंत्र'** एक ऐसा अचूक व फलप्रद यंत्र है, जिसकी स्थापना मात्र भी सफलता देने में सहायक होती है।

विश्व में सर्वश्रेष्ठ साधक तिब्बत के माने गए हैं और उनकी सफलता का रहस्य केवल एक मंत्र में छुपा है जिसका वे निरंतर उठते-बैठते, चलते-फिरते जप करते रहते हैं यह सिद्धिप्रद मंत्र है-**'ॐ मणि पद्मे हुं'।**

प्रायः साधक को वह ऊर्जा नहीं प्राप्त हो पाती है जो उसे साधना के नियमों का दृढ़ता से पालन करने पर प्राप्त होती है। इसकी पूर्ति के लिए साधक को ऐसे छोटे-छोटे प्रयोगों को भी सम्पन्न करते रहना चाहिए जो कि उसकी भौतिक आवश्यकताओं एवं साधनात्मक दृष्टि से भी उपयोगी हों। **सिद्धाश्रम गुटिका, कल्पवृक्ष गुटिका, सिद्धिप्रद गुटिका आदि इसी प्रकार के श्रेष्ठतम उपाय हैं।**

किसी भी साधना में सफलता का मूल गुरुकृपा होती है अतः सभी साधकों को साधना प्रारम्भ करने से पूर्व गुरुमंत्र का 1250 माला मंत्र जप का अनुष्ठान 11 या 21 दिन में अवश्य पूर्ण कर लेना चाहिए और एक आसन पर अविचलित भाव से कम से कम 1 घंटे बैठने का अभ्यास करना चाहिए। ऐसा धीरे-धीरे अभ्यास से सम्भव हो जाता है।

साधना वास्तव में सम्पूर्णता की ही पर्यायवाची है और एक धीमी तथा सतत् प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति के खान-पान, आचरण, आंतरिक शुद्धि, प्रत्येक स्थिति का महत्व होता है **क्योंकि जो कुछ सामान्य रूप से व्यक्ति के भाग्य में नहीं होता, उसे ही प्राप्त करने की क्रिया ही तो 'साधना' है, अतः इसमें अड़चनें एवं बाधाएं आनी स्वाभाविक ही हैं। साधक को अपना धैर्य एवं संयम तथा शालीनता कदापि नहीं छोड़नी चाहिए। यही तो वे गुण हैं जो उसे भीड़ से अलग करते हैं, और अंत में पूज्य गुरुदेव के वचन को उद्धृत करूं तो बाधाएं व अड़चनें उन्हीं के जीवन में आती हैं जो 'पुरुष' होते हैं।**

-राजेश गुप्ता